भगत रविदास – सबद २०
चमरटा गांठि न जनई ॥
रागु सोरठि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५९

चमरटा गांठि न जनई ॥
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥
आर नही जिह तोपउ ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥
रविदासु जपै राम नामा ॥
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥

सार: अन्यायपूर्ण सामाजिक और धार्मिक नियमों को न मानना सकारात्मक शक्ति के तौर पर देखा जा सकता है। यह आलोचनात्मक सोच, विविधता और अलग-अलग नज़रियों को अपनाने की भावना पैदा करता है। स्थापित नियमों पर गहराई से सोचने से हमें सामाजिक मूल्यों और मानकों के विकास में योगदान करने में मदद मिल सकती है जिससे सकारात्मक परिवर्तन और विकास होता है। यह विकास लोगों को स्वतंत्रता और सत्यता के साथ जीने देता है जिससे हमारा भिन्नता से भरा समाज और ज़्यादा समृद्ध और सामंजस्यपूर्ण बनता है।

चमरटा गांठि न जनई ॥
मैं मोची परिवार से हूँ और मेरे पास मरम्मत के लिए गाँठ बाँधने का हुनर नहीं है। यह एक ऐसी सोच को दिखाता है जो मानती है कि हम विशिष्ट गुणों के साथ जन्म लेते हैं जिनमें से कुछ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरण किये जाते हैं और कुछ सीखे या अर्जित किये जाते हैं।

लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥

लोग अपने जूते ठीक करवाने आते हैं। यह एक सीमित सोच को दिखाता है जो बदलाव को अपनाने के बजाय परिचित को पकड़े रहना पसंद करती है। (१)(विराम)

आर नही जिह तोपउ ॥

मेरे पास ऐसे औज़ार नहीं हैं जिनसे मरम्मत हो सके। यह समाज की कट्टर, अनुचित सोच के साथ सामंजस्य न बिठा पाने की एक ईमानदार स्वीकारोक्ति है।

नही रांबी ठाउ रोपउ ॥१॥

मेरे पास पैबंद लगाने के औज़ार नहीं हैं। यह उन अनुचित सामाजिक और धार्मिक नियमों का बाहरी तौर पर पाखंडी पालन करने से इनकार करना दिखाता है जो भीतरी तौर से भी सही नहीं लगते। (१)

लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥

लोग मरम्मत के नाम पर गाँठ लगवाते रहते हैं जिससे जो चीज़ें पहले से अच्छी थीं, वह भी खराब हो जाती हैं। यह दिखाता है कि रस्मों-रिवाजों वाली सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं का ज़बरदस्ती या बिना सोचे-समझे पालन करने से विश्वास प्रणालियों का मूल सार कैसे बिगड़ सकता है।

हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥२॥

मैं बिना एक भी गांठ बांधे मंज़िल तक पहुँच गया। यह बताता है कि हमें उन सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं का पालन करने की ज़रूरत नहीं है जो दमन करती हैं, उन्हें छोड़ने से हम वहाँ पहुँच सकते हैं जहाँ वास्तव में हमारी जगह है। (२)

रविदासु जपै राम नामा ॥

रविदास कहते हैं कि वह सर्वव्यापी सार्वभौमिक वास्तविकता का ध्यान करते हैं।

मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥

मुझे नकारात्मकता में कोई दिलचस्पी नहीं है। यह एक व्यावहारिक मानसिकता को उजागर करता है जो केवल उसी पर ध्यान केंद्रित करती है जो सार्वभौमिक कल्याण को बढ़ावा देती है। (३)(७)

तत्त्व: भगत रविदास अपने मोची के पेशे से जुड़ी चित्रात्मकता का इस्तेमाल करके एक गहरा संदेश देते हैं। वह इस विडंबना की ओर इशारा करते हैं कि जहाँ एक मोची का काम बांधना और सिलना है, वहीं आध्यात्मिक साधक की यात्रा आज़ाद रहने के बारे में है। यह बताता है कि दुनिया हर चीज़ को एक साथ बांधने की कोशिश करके स्वयं को जटिल बना लेती है, चाहे वह संबंध हों, धन हो, पद हो या धर्म हो। इसके विपरीत, एक भक्त खुलेपन और सरलता से आगे बढ़ता है। वह निष्कर्ष निकालते हैं कि डर उन लोगों को फंसा सकता है जो बंधे हुए हैं जबकि गांठों से मुक्त मन सहजता और दृढ़ता के साथ जीवन में आगे बढ़ सकता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com